

B.A. 4th Semester (General) Examination, 2022 (CBCS)

Subject : Sanskrit

Course : CC-4/GE-4

Time : 3 hours

Full Marks : 60

The figures in the right hand margin indicate full marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. Instructions for GE-4 (Honours student of other discipline) 2×10=20

अधोलिखितेषु प्रश्नेषु दशप्रश्नानामुत्तरं संस्कृतभाषया देव-नागरीलिपिमाश्रित्यप्रदेयम्। तत्र 'क' विभागतः प्रश्नचतुष्टयं 'ख' विभागतश्च प्रश्नचतुष्टयमवश्यमेव चयनीयम्।

(निम्नलिखित प्रश्नগুলির মধ্যে দশটি প্রশ্নের উত্তর সংস্কৃতভাষায় ও দেবনাগরী লিপিতে লিখতে হবে। তার মধ্যে 'ক' বিভাগ থেকে ছয়টি এবং 'খ' বিভাগ থেকে চারটি প্রশ্নের উত্তর অবশ্যই দিতে হবে।)

Instructions for CC-4 (General Students)

अधोलिखितेषु प्रश्नेषु 'क' विभागतः प्रश्नचतुष्टयं 'ख' विभागतश्च प्रश्नचतुष्टयमाश्रित्य दशप्रश्नानामुत्तरं प्रदेयम्। तेषु द्वयोः संस्कृतभाषया उत्तरमवश्यमेव लेखनीयम्।

(নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির মধ্যে 'ক' বিভাগ থেকে ছয়টি এবং 'খ' বিভাগ থেকে চারটি প্রশ্ন নিয়ে মোট দশটি প্রশ্নের উত্তর দিতে হবে। তাদের মধ্যে দুটি প্রশ্নের উত্তর সংস্কৃত ভাষায় অবশ্যই লিখতে হবে। 2×10=20)

'ক' বিভাগঃ

'ক'-বিভাগ

- (a) কেন सूत्रेण 'घि' इति संज्ञा संभवति?
(কোন সূত্রের দ্বারা ঘি সংজ্ঞা হয়?)
- (b) सम्प्रसारणसंज्ञाविधायकं सूत्रं लिख्यताम्?
(सम्प्रसारणसंज्ञा विधायकं सूत्रं लेख)
- (c) কেন सूत्रेण 'पतिः' शब्दस्य 'घि' संज्ञा न भवति?
('पति' शब्दस्य 'घि' संज्ञा केन न भवति?)
- (d) अधस्तनेषु द्वयोः ल्यप्-प्रत्ययासु रूपं लेखनीयम्।
(निम्नलिखित धातुগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি ধাতুর ল্যপ্-প্রত্যয়া সংযোগে রূপ লেখ।)
प्र-वच्, अधि-इ, वि-कु, वि-भज्।
- (e) निम्नलिखितेषु धातुषु द्वयोः 'क्त'-प्रत्ययासु रूपं निरूपयत।
(निम्नलिखित धातुগুলির মধ্যে যে কোনো দুটি ধাতুর क्त-প্রত্যয়া—যোগে রূপ নির্ণয় করো।)
इत्, तन्, पच्, वच्।

[2]

- (f) 'ङ्' -प्रत्ययस्य नामान्तरं किम् ?
('ङ्' प्रत्ययेर नामान्तर की ?)
- (g) उदाहरणसहयोगेन 'नदी' इत्यस्य लक्षणं दीयताम् ।
(उदाहरणसह 'नदी'-संज्ञार लक्षण उल्लेख करो ।)
- (h) 'वृद्धिरादैच्' इति सूत्रं व्याख्यायताम् ।
('वृद्धिरादैच्' सूत्रं व्याख्या करो ।)
- (i) अधस्तनेषु पदेषु कस्यचित् पदद्वयस्य व्युत्पत्तिं निरूपयत ।
(नीचेर ये कोनो दुटि पदेषु व्युत्पत्ति निर्णय करो)—उद्धा, गेयम्, वसितुम्, कुर्वाण ।

'ख' विभागः

'ख' विभाग

- (a) एकपदीकरणं क्रियताम् (यथाकामं द्वयम्) ।
(एककथय प्रकाश करो) (ये कोनो दुटि) ।
कुलस्य अपत्यं पुमान्, उदकं पातुम् इच्छति, ह्यत्र शीलम् अस्य, वने भवः ।
- (b) सन्प्रत्ययनिष्पन्नं पदद्वयं लिख्यताम् ।
('सन्प्रत्ययनिष्पन्न ये कोनो दुटि पदेषु उदाहरण लेखो ।)
- (c) व्याकरणशास्त्रे 'उपधा' इत्यनेन किं बोध्यते ?
(व्याकरणशास्त्रे 'उपधा' बलते की बोधाय ?)
- (d) संज्ञा लेखनीया (यथाकामम् एकम्) ।
(संज्ञा लेखो) (ये कोनो एकटि)
भाष्यम्, सूत्रम् ।
- (e) सूत्रमुल्लिख्य 'घु'—इत्यस्य व्याख्या कार्या ।
(सूत्र उल्लेखपूर्वक 'घु'—एर व्याख्या करो ।)
- (f) निम्नलिखितेषु द्वयोः परिनिष्ठितं रूपं लिखत—
(नीचेर ये कोनो दुटिर परिनिष्ठित रूप लेखो ।)
द् + ङ्, प्र-काश + तुमुन्, नृत् + यञ् + लट्ते, दा + यत् ।

2. अधोनिर्दिष्टेषु प्रश्नेषु यथेच्छं चतुर्णां प्रश्नानामुत्तरं देयम्। तन्मध्ये प्रश्नद्वयं संस्कृतभाषया लिख्यताम्। 5×4=20
(निम्नलिखित प्रश्नগুলির মধ্যে চারটি প্রশ্নের উত্তর দিতে হবে। তার মধ্যে দুটি প্রশ্নের উত্তর অবশ্যই সংস্কৃত ভাষায় লিখতে হবে।)
- (a) कुत्र 'सन्' इति प्रत्ययस्य प्रयोगः दृश्यते? सोदाहरणं लिख्यताम्।
(কোথায় 'সন্' প্রত্যয়ের প্রয়োগ দেখা যায়? উদাহরণসহ লেখ।)
- (b) कृत्यप्रत्ययानां व्याख्या कार्या।
(কৃত্যপ্রত্যয়গুলি ব্যাখ্যা করো।)
- (c) धातोरर्थात्तरे वृत्ते धात्वर्थेनोपसंग्रहात्।
प्रसिद्धेरविवक्षातः कर्मणोऽहकर्मिका क्रिया।।
— इयं कारिका व्याख्या कार्या।
—(এই কারিকাটি ব্যাখ্যা করো।)
- (d) द्विकर्मकक्रियाविषये दृष्टाञ्चैन सह আলোচ্যতাম্।
(দ্বিকর্মক ক্রিয়া সম্পর্কে উদাহরণসহ আলোচনা করো।)
- (e) संक्षिप्ता टीका कार्या (यथाकामं दयम्)।
(সংক্ষিপ্ত টীকা লেখো) (যে কোনো দুটি)।
উপসর্গ, বার্তিক, গুণ, গতি।
- (f) सार्थकवाक्यरचनया अर्थपार्थक्यं निर्दिशत (यत्किञ्चित् द्वितयम्)—
(যে কোনো দুজোড়া পদের সার্থক বাক্যরচনার মাধ্যমে অর্থপার্থক্য দেখাও।)
(i) पुत्रीयति पुत्रायते
(ii) राजायते राजन्यति
(iii) ক্ষীরস্যতি ক্ষীরীয়তি
(iv) शूद्रा-शूद्री।
3. अधोनिर्दिष्टेषु विभागद्वयेषु एकैकं प्रश्नमाश्रित्य प्रश्नद्वयस्य उत्तरं दीयताम्। 10×2=20
(নিম্নলিখিত বিভাগ দুটি থেকে একটি করে প্রশ্ন নিয়ে মোট দুটি প্রশ্নের উত্তর দিতে হবে।)

'क' विभागः

'क' विभाग

- (a) दृष्टाञ्चसहयोगेन कर्मप्रवचनीयविषये संक्षिप्तवर्णनं प्रदेयम्।
(কর্মপ্রবচনীয় বিষয়ে উদাহরণসহ সংক্ষিপ্ত বর্ণনা দাও।)

- (b) (i) ভূম-নিন্দাপ্রশংসাসু নিত্যযোগেহতিশায়নে।
সংসর্গেহস্তিবিক্রিয়াং ভবন্তি মতুবাদয়ঃ।।
—ইয়ং কারিকা ব্যাখ্যা কার্যা।
—এই কারিকাটি ব্যাখ্যা করো।
- (ii) কুত্র 'তুমুন্' ইতি প্রত্যয়স্য প্রয়োগঃ ভবতি লিখ্যতাম্।
'তুমুন্' প্রত্যয়ের প্রয়োগ কোন্ কোন্ ক্ষেত্রে হয় লেখ।

'খ' বিভাগঃ

'খ' বিভাগ

অধোলিখিতমনুচ্ছেদং পঠিত্বা প্রদত্তপ্রশ্নানামুত্তরাণি সংস্কৃতভাষয়া লিখত—

(নিম্নলিখিত অনুচ্ছেদটি পাঠ করে প্রদত্ত প্রশ্নসমূহের উত্তর সংস্কৃত ভাষায় লেখ।)

- (a) অহমেকদা দক্ষিণারণ্যে চরন্নপশ্যম্—একো বৃদ্ধোব্যায়ঃ স্নাতঃ কুশহস্তঃ সরস্তীরে ব্রূতে ভোঃ ভোঃ পাহ্বাঃ! ইদং সুবর্ণ-কঙ্কণং গৃহ্যতাম্। ততো লোভাকৃষ্টেন কেনচিত্ পাহ্বেনালোচিতম্ ভাগ্যেনৈতৎ সম্ভবতি। তন্নিরূপয়ামি তাবত্। প্রকাশং ব্রূতে কুত্র তব কঙ্কণম্? ব্যায়ো হস্তং প্রসার্য দর্শয়তি। পাহ্বোহবদৎ কথং মারাত্মকে ত্বয়ি বিশ্বাসঃ? ব্রায় উবাচ—শৃণুয়ে পাহ্ব! প্রাগেব যৌবনদশায়ামতিদুর্ভুত আসম্। অনেকগোমানুষাণাং বধান্মে পুত্রা মৃত্য দারাস্চ। বংশহীনশ্চাহম্। ততঃ কেনচিদ্ ধার্মিকোহমাদিষ্টঃ—দানধর্মাদিকং চরতু ভবান্।
- (i) ব্যায়স্য হস্তে কিমাসীত? 1
- (ii) ব্যায়ঃ কিং দাতুমিচ্ছতি স্ম? 1
- (iii) পাহ্বঃ কীদৃশঃ অভবৎ? কিংবা সোহপৃচ্ছৎ? 2
- (iv) পাহ্বস্য বিশ্বাসোৎপাদনার্থং ব্যায়ঃ কিমুবাচ? 3
- (v) কুত্রাসীৎ বৃদ্ধঃ ব্যায়ঃ? 1
- (vi) কথং পাহ্বঃ লোভাকৃষ্টঃ অভবৎ? 2
- (d) আসীৎ সত্যযুগে বৃহো নাম দৈত্যরাজঃ। উগ্রেণ তপসা স মহাদেবং সন্তোষ্য তস্য বরং লব্ববান্। স ইন্দ্রাদীন দেবান্ পরাজিত্য স্বর্গরাজ্যং তান্ বিতাড়িতবান্। অথ কদাচিৎ সর্বে দেবা মিলিত্বা বিধাতৃসমীপং গতবন্তো বৃত্রকৃতাং দুর্দশাং নিবেদিতবন্তশ্চ। বিধাতা আহ—ভো দেবাঃ পৃথিব্যাং দধীর্চির্নাম মুনিরস্তি। তস্য অস্থিনির্মিতেনাস্ত্রেণ দুরাশ্বা বৃত্রাসুরো নিহন্তব্যঃ। তদ্ গত্ত্বা পৃথিবীং তস্যাস্থিনি যাচস্তাং ভবন্তঃ। সর্বে দেবাঃ দধীচেরাশ্রমং জগ্মুঃ। ধ্যানযোগেন মুনি-শ্রেষ্ঠস্তেষামভিপ্রায়ং জ্ঞাতবান্। দেবানাং কার্যসাধনার্থং মুনিঃ যোগবলেন প্রাণানত্যজৎ। অথ বিশ্বকর্মা মহর্ষেরস্থিভিরায়ুধং নির্মায় ইন্দ্রায় দত্তবান্।
- i) কিং নামাসীৎ দৈত্যরাজস্য? 1
- (ii) স কস্মাৎ বরং প্রাপ্তবান্? 1

[5]

- | | |
|---|---|
| (iii) कथं देवाः विधातृसमीपं गतवन्तः? | 2 |
| (iv) विधात्रा वृत्रवधस्य कः उपायः वर्णितः? | 3 |
| (v) देवानाम् आगमनकारणं कथं महर्षिः ज्ञातवान्? | 2 |
| (vi) विश्वकर्मणः कर्मकुशलता कीदृशी? | 1 |
-